International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Jan - Feb- 2017, Volume-4, Issue-1
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक योग्यता, सीखने की शैली और निर्णय लेने का अध्ययन

रेणु कुमारी

शोधार्थी नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर टेक्निकल यूनिवर्सिटी

डॉ. प्रेम सुंदर

असिस्टेंट प्रोफेसर नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर टेक्निकल यूनिवर्सिटी

सार

जीवन कौशल और आगे सीखने की क्षमता के मामले में किशोरों में बौद्धिक विकास की एक मजबूत नींव के लिए समाज की सामाजिक - आर्थिक उन्नति में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।यह व्यक्ति को शारीरिक सहनशक्ति , बौद्धिक शक्ति , सामाजिक ईमानदारी , भावनात्मक संतुलन , आध्यात्मिक चेतना और उच्च नैतिकता के गुणों को विकसित करने में सक्षम बनाता है।किशोरावस्था बचपन से वयस्कता में संक्रमण की अवधि है। इसलिए , इस स्तर पर निर्णय लेना उनके लिए और साथ ही उनसे संबंधित अन्य सभी के लिए सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। और जिस अध्ययन के बारे में चर्चा कीवरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा महत्व , भावनात्मक योग्यता , सीखने की शैलियाँ , निर्णय लेना , वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर निर्णय लेने का महत्व।

प्रमुख शब्द :वरिष्ठ,माध्यमिक , छात्रों

परिचय

शिक्षा एक मानवतावाद प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया व्यक्ति में एक जीवित जीव से मनुष्य में परिवर्तन लाती है। शिक्षा मनुष्य के सभी गुणों को सुधारने का एक तरीका है। यह व्यक्ति को शारीरिक सहनशक्ति , बौद्धिक शक्ति , सामाजिक ईमानदारी , भावनात्मक संतुलन , आध्यात्मिक चेतना और उच्च नैतिकता के गुणों को विकसित करने में सक्षम बनाता है। शायद यही कारण है कि प्रत्येक समाज अगली पीढ़ी की सर्वोत्तम संभव शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक व्यवस्था करने का प्रयास करता है। इक्कीसवीं सदी में दुनिया एक ज्ञान आधारित समाज होगी जिसमें कई अवसर होंगे और कल बेहतर नागरिक की जरूरत होगी। इस प्रकार , दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य उभरती चुनौतियों और चिंताओं का जवाब देना है , जिसका उद्देश्य शिक्षा को व्यक्तियों , समुदायों और राष्ट्रों की जरूरतों के लिए प्रासंगिक बनाना है। .

भारत के लोग भारत के सबसे मूल्यवान संसाधन हैं , कलाम) 2004) ने भारतीय संसद में एक भाषण में घोषित किया। हमारी मानव पूंजी की पूरी क्षमता को अभी तक महसूस नहीं किया जा सका है। इसलिए शिक्षा को सर्वोच्च महत्व दिया जाना चाहिए। " गुण वत्ता आश्वासन के लिए सामान्य रूप से स्कूलों और शिक्षा की निगरानी की आवश्यकता है। सहायक , उत्पादक और सतर्क होने के लिए , एक अच्छी शिक्षा होनी चाहिए। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग सोचता है कि उत्कृष्ट स्कूली शिक्षा विकास की आधारशिला है और भारत को एक ज्ञान समाज बनाने की दिशा में किसी भी प्रगति के लिए एक पूर्वापेक्षा है ।कलाम के " इंडिया 2020; ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम " के अनुसार , " हमारे अरबों लोग एक विकसित देश में भारत के विकास के लिए एक संसाधन हैं। हाई स्कूल की उम्र के बढ़ते और ऊर्जावान किशोरलोगों के एक समूह के प्रयासों के माध्यम से

राष्ट्रीय उत्थान प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा ही उन्हें उचित दिशा और मूल्य - आधारित ढांचा प्रदान करने का एकमात्र तरीका है। हमारे पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता है , और दोनों हमारे राष्ट्र के भविष्य के लिए आवश्यक हैं

वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा महत्व

जीवन कौशल और आगे सीखने की क्षमता के मामले में किशोरों में बौद्धिक विकास की एक मजबूत नींव के लिए समाज की सामाजिक - आर्थिक उन्नति में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अलावा , एक बच्चे की शिक्षा की जड़ों को आधार बनाते हुए , वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा बच्चे को जीवन में उसकी उच्च उपलब्धियों के लिए आकार देने और निर्देशित करने में सहायक हो सकती है। शिक्षा का यह चरण उच्च शिक्षा को आगे बढ़ाने के साथ - साथ अंतर्निहित दक्षताओं को प्रदान करने का कार्य करता है जो स्वयं को विभिन्न प्रकार के ज्ञान और कौशल में फैलाता है।वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा 16 से 18 वर्ष के आयु वर्ग में फैली हुई है। यह किशोरावस्था की अवधि है जब छात्र विभिन्न मनोवैज्ञानिक तनावों और तनावों से गुजरते हैं। इसके अलावा , एक छात्र अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न शारीरिक परिवर्तनों और विकासों का पता लगाता है। वह भावनात्मक रूप से अधिक संवेदनशील हो जाता है और वह खुशी , भय , चिंता और सभी प्रकार की इच्छाओं और कार्यों के दर्द से गुजरता है। वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा मूल रूप से किशोरों की पूर्ति करती है। इसलिए , वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा को इन किशोरों की शारीरिक , मानसिक , नैतिक मांगों का जवाब देना चाहिए। चूंकि , उनमें से बड़ी संख्या में नौकरी और काम का विकल्प चुनते हैं , इस तरह की शिक्षा से उन्हें उनके लिए क्षमताओं और प्रशिक्षण से भी लैस किया जाना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा की दो साल की अवधि काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि लगभग 50% किशोर मैट्रिक के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं। वे औपचारिक अध्ययन को अलविदा कह सकते हैं लेकिन सीखना एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और सीखने की औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। हालांकि , कोई भी इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता है कि वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा किशोरों के लिए वांछित कैरियर बनाने के लिए पहला और सबसे मूल्यवान कदम है।

भावनात्मक योग्यता

भावनात्मक क्षमता की अवधारणा भावनाओं को मानव होने के सामान्य , उपयोगी पहलुओं को समझने में निहित है। भावनात्मक क्षमता व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल है जो काम की दुनिया में बेहतर प्रदर्शन की ओर ले जाती है। भावनात्मक दक्षताओं को भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आधार पर जोड़ा जाता है। भावनात्मक दक्षताओं को सीखने के लिए एक निश्चित स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता आवश्यक है। सामाजिक बुद्धिमत्ता के रूप में भावनात्मक क्षमता , जिसमें एक व्यक्ति की खुद की और दूसरे की भावनाओं और उनके बीच भेदभाव करने और इस जानकारी का उपयोग करने की सोच और कार्रवाई को निर्देशित करने के लिए भावनाओं को मॉनिटर करने की क्षमता शामिल है।

भावनात्मक क्षमता का सीखना स्कूल के पाठ्यक्रम के भीतर होना चाहिए ताकि प्रत्येक छात्र को इसका अधिकतम लाभ मिल सके और जब तक वह स्कूल पूरा करता है , तब तक वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में विकसित होता है जो पूरी तरह से सुरक्षित है। स्कूल में अपने समय के दौरान आने वाली मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समस्याओं को दूर करने के लिए छात्रों के लिए भावनात्मक क्षमता भी बहुत सहायक होगी। कुमार और सिंह) 2013) ने पाया कि दृष्टिगत छात्रों में समायोजन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। इसके अलावा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का दृष्टिगत छात्रों के समायोजन से प्रतिकूल संबंध है। वर्तमान अध्ययन संबंधित साहित्य की समीक्षा के बाद आयोजित किया जाता है। माध्यमिक स्कूल के छात्रों के जीवन में भावनात्मक क्षमता और संतोषजनक समायोजन के महत्व और सक्रिय भाग को देखकर जो परिवार समान रूप से प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए शोधकर्ता को परमाणु परिवारों से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक क्षमता और समायोजन का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस होती है।

निर्णय लेना

निर्णय लेना विभिन्न विकल्पों के संभावित परिणामों पर विचार करके क्या करना है यह चुनने की प्रक्रिया है ") बेथ - मैरो म , फिशहॉफ , जैकब्स क्राड्रेल (। फिशहॉफ , क्रोवेल और किपके) 1999) बताते हैं , " निर्णय लेने की प्रक्रिया में तर्क कौशल बहुत मूल्यवान हैं। निर्णय लेने में व्यवस्थित सोच , स्थिति का आकलन और इसके संभावित परिणाम शामिल हैं। " निर्णय लेने की प्रक्रिया ' प्रासंगिक विकल्प ' ' प्रत्येक विकल्प के संभावित परिणामों ', ' पसंद की व्यावहारिकता ' और सभी विकल्पों के महत्व को निर्धारित करने से संबंधित है। बेथ - मैरोम एट अल के अनुसार , अंत में निर्णय लेना शामिल है।) 1991) " इस सारी जानकारी को मिलाकर यह तय करने के लिए कि कौन सा विकल्प सबसे आकर्षक है " ।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर निर्णय लेने का महत्व

किशोरावस्था बचपन से वयस्कता में संक्रमण की अवधि है। इसलिए , इस स्तर पर निर्णय लेना उनके लिए और साथ ही उनसे संबंधित अन्य सभी के लिए सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। इनमें से कुछ विकल्पों में यह शामिल हो सकता है कि कौन सा करियर बनाना है , सेक्स करना है या गर्भ निरोधकों का उपयोग करना है या नहीं , शराब , सिगरेट या अन्य दवाओं का उपयोग करना है या नहीं या हिंसक या जोखिम भरा व्यवहार करना है या नहीं।फिशहॉफ एट अल।) 1999) दृढ़ता से मानते हैं कि युवा विकास कार्यक्रम ' सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं ' यदि वे निर्णय लेने और समस्या निवारण तकनीकों में कुशल हैं। इसी तरह , अवांछनीय विकल्पों के लिए ' इनकार ' या ' प्रतिरोध ' में ' सामाजिक और विनियमन ' कौशल और आत्मविश्वास भी किशोरों के व्यक्तित्व के संतुलित विकास में बहुत काम आते हैं। जेमॉट III, जेमॉट एंड फ्रॉग) 1998) सेंट लॉरेंस , एट अल। , (1995) ने वर्णन किया कि " निर्णय लेने के कौशल अक्सर एक किशोर के यौन व्यवहार का विरोध और विनियमन करते हैं " ।एपस्टीन , ग्रिफिन और बॉटविन , (2000) ने पाया है कि " किशोरावस्था में निर्णय लेने का कौशल अच्छा होता है , वे शराब और अन्य दवाओं को मना करने में बेहतर होते हैं " । इसके अलावा , उनमें अवसाद के हमलों और आत्महत्या करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की क्षमता है।भारत में किशोरों के लिए मजबूत निर्णय लेने का कौशल सबसे जरूरी है क्योंकि आज हमें ऐसे युवाओं की जरूरत है जो हर स्तर पर सही निर्णय लेने में सक्षम हों। अतीत में शायद इसकी आवश्यकता नहीं थी। " अगर हमारे लोकतंत्र को होना है " सफल होने पर हमारे पास व्यापक जागरूक नागरिक होने चाहिए जिनके पास व्यक्तिगत सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों से निपटने में निर्णय लेने की विवेकपूर्ण क्षम ता हो।उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर छात्रों की भावनात्मक क्षमता , सीखने की शैली और निर्णय लेने की शैली के बीच संबंधों की जांच पर केंद्रित है।

साहित्य की समीक्षा

बिनुल (2015) ने अध्ययन किया "भावनात्मक बुद्धिमत्ता , सामाजिक कौशल और भावी शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के बीच संबंध।" सर्वेक्षण विधि का उपयोग 350 छात्र शिक्षकों के नमूने से डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था। अध्ययन के परिणाम से ईआई और सामाजिक कौशल , ईआई और शिक्षण योग्यता के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध सामने आया।

बख्शी (2014) ने "संज्ञानात्मक चर यानी बुद्धि , रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि और गैर संज्ञानात्मक चर यानी पारिवारिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य के साथ किशोरों की भावनात्मक क्षमता के बीच संबंध" का अध्ययन किया। कुल नमूने में 360 किशोर शामिल थे जो जम्मू क्षेत्र में 9 वीं कक्षा में पढ़ते थे। डेटा इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण थे: भावनात्मक क्षमता स्केल (भारद्वाज और शर्मा , 1995), ग्रुप टेस्ट और जेनरल मेंटल एबिलिटी (टंडन , 1990), क्रिएटिव थिंकिंग टेस्ट (बकर मेहदी) , पारिवारिक पर्यावरण स्केल (भाटिया और चड्ढा , 1993), और मानसिक स्वास्थ्य सूची (जगदीश और श्रीवास्तव , 1983) । भावनात्मक क्षमता के साथ खुफिया और शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध किया गया।

कटारिया और कौर (2014) ने "काम करने वाली और काम न करने वाली माताओं की स्कूल जाने वाली किशोरों की सामाजिक क्षमता और भावनात्मक क्षमता के बीच अंतर" की जांच की। परिणाम से पता चला कि कामकाजी माताओं के पुरुष और महिला किशोरों में गैर-कामकाजी माताओं की किशोरावस्था की तुलना में खराब सामाजिक क्षमता है। गैर कामकाजी माताओं के पुरुष किशोरों में उनकी कामकाजी माताओं की तुलना में महिला की खराब भावनात्मक क्षमता पाई गई। दूसरी ओर , पुरुष और महिला किशोरों की सामाजिक क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था , लेकिन गैर-कामकाजी माताओं के किशोरों की भावनात्मक क्षमता उनके कामकाजी समकक्ष की तुलना में खराब भावनात्मक क्षमता है।

रेड्डी और अनुराधा (2013) " उच्च माध्यमिक स्तर के भावनात्मक खुफिया (व्यावसायिक) और व्यावसायिक तनाव (ओएस) और नौकरी के प्रदर्शन (जेपी) के बीच संबंधों की जांच की।" तमिलनाडु के वेल्लोर जिले से उच्च माध्यमिक स्तर के 326 शिक्षकों को अध्ययन के नमूने के रूप में सेवा दी गई। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत , मीन , एसडी , मतलब आईएसडी और सहसंबंधों का भी उपयोग किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि ईआई और ओएस के बीच महत्वपूर्ण लेकिन नकारात्मक संबंध पाया गया था ; ओएस और जेपी ; और ईआई और जेपी के बीच संभावित संबंधपाया गया था।

खाती (2013) ने "लिंग , अकादमिक धारा और शैक्षणिक प्राप्ति के संबंध में स्नातकोत्तर छात्रों की बौद्धिक क्षमता , भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया।" नमूने में तीन संकायों कला , वाणिज्य और विज्ञान संकाय से कुमाऊं विश्वविद्यालय , नैनीताल के अंतिम वर्ष में अध्ययनरत 340 स्नातकोत्तर छात्र शामिल थे। परिणामों ने संकेत दिया कि सभी तीन निर्माण अर्थात् बौद्धिक क्षमता , भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता लिंग मुक्त निर्माण हैं। बौद्धिक क्षमता और आध्यात्मिक बुद्धि सकारात्मक और एक दूसरे से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित हैं। शैक्षणिक स्ट्रीम में भिन्न छात्र अपनी बौद्धिक क्षमता , भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में भिन्न होते हैं। अध्ययन से यह भी पता चला कि शैक्षणिक योग्यता बौद्धिक क्षमता से महत्वपूर्ण और सकारात्मक रूप से संबंधित है ; आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता कुछ हद तक शैक्षिक प्राप्ति से संबंधित है जबकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता सामान्य रूप से शैक्षिक प्राप्ति से जुड़ी नहीं है।

रेड्डी और अनुराधा (2012) ने जांच की "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर काम करने वाले शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि।" तमिलनाडु के वेल्लोर जिले से चयनित 327 शिक्षकों ने अध्ययन के नमूने का गठन किया। सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक कार्यरत थी। प्रतिशत , मतलब , एसडी , मतलब आईएसडी , टी-टेस्ट , एफ-टेस्ट और चरणबद्ध एकाधिक प्रतिगमनविश्लेषण कार्यरत थे। अनुसंधान के परिणाम थे: (1) शिक्षकों के पास आत्म-आयाम आयामों के 7 पहलुओं में EI का मध्यम स्तर था , (2) शिक्षकों के पास आत्म-प्रबंधन के आयाम में EI का मध्यम स्तर था , (3) आयाम-सामाजिक के संबंध में जागरूकता , शिक्षकों ने सामाजिक जागरूकता का उच्च स्तर दिखाया , (4) सामाजिक कौशल आयाम के तहत , शिक्षक केवल दो पहलुओं में सामाजिक स्तर के निम्न स्तर का प्रदर्शन करते हैं ; जरूरत पड़ने पर दूसरों से मदद लेने में कठिनाई और छात्रों के माता-पिता के हित में दिखाई देने पर आश्वस्त न थे।

महाजन (2015) ने "वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अर्थशास्त्र में उपलब्धि पर सीखने और सोचने की शैली का प्रभाव" का अध्ययन किया। 200 वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों ने अध्ययन का नमूना बनाया। यह जिले से चुना गया था। सरल यादृच्छिक विधि का उपयोग करके पंजाब (भारत) का पठानकोट। दो पैमानों का इस्तेमाल किया गया: 1) वेंकटरामन द्वारा स्टाइल ऑफ लर्निंग एंड थिंकिंग (एसओएलएटी) स्केल (1994) 2) खुद को अन्वेषक द्वारा किए गए अर्थशास्त्र में उपलब्धि परीक्षण। सांख्यिकीय तकनीक जैसे: प्रतिशत , टी-टेस्ट और एनोवा का उपयोग परिणामों के विश्लेषण के लिए किया गया था। मुख्य परिणाम थे: अधिकांश वरिष्ठ माध्यमिक छात्र वाम मस्तिष्क गोलार्द्ध का उपयोग करना पसंद करते थे , जहां तक अर्थशास्त्र में उनकी उपलब्धि का संबंध था , उनकी सीखने और सोचने की शैली के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था ; जबकि लिंग के

आधार पर सीखने और सोचने की शैली के लिए उनकी प्राथमिकता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। महिला छात्रों ने पुरुष मस्तिष्क जबकि वाम मस्तिष्क गोलार्द्ध के लिए प्राथमिकता दी। छात्रों को सही मस्तिष्क गोलार्द्ध के लिए वरीयता थी ; लेकिन लिंग के आधार पर अर्थशास्त्र में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

गेडी और जाम (2014) ने "ईएफएल छात्रों में उच्च शिक्षा के लिए सीखने की शैली और प्रेरणा के बीच संबंध" की जांच की। इस उद्देश्य के लिए , 90 ट्रेफिक छात्रों को शाहरेकॉर्ड विश्वविद्यालय से उठाया गया था। दो प्रश्नावली का उपयोग छात्र की सीखने की शैली और उच्च शिक्षा के लिए छात्र की प्रेरणा की जांच करने के लिए किया गया था। अनुसंधान ने इन प्रमुख निष्कर्षों को निष्कर्ष निकाला

एलेड और ओगबो (2014) ने एक अध्ययन आयोजित किया जिसका शीर्षक था , लागोस महानगर , नाइजीरिया में सार्वजनिक और निजी माध्यमिक विद्यालयों में रसायन विज्ञान के छात्रों की सीखने की प्राथमिकताएँ। नमूने में दो सौ (200) एसएस 2 रसायन विज्ञान के छात्र शामिल थे। प्रतिभागियों को हैट और ड्रॉ का उपयोग करके चयनित किया गया था और स्तरीकृत नमूने के तरीकों को नापसंद किया गया। डेटा इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण रसायन विज्ञान उपलब्धि परीक्षण (कैट) और वीएके शैली परीक्षण सीखना (वीएलएसटी) थे। परिणाम से पता चला कि सार्वजनिक और निजी दोनों स्कूलों में सीखने की प्राथमिकताओं और रसायन विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था। दोनों स्कूल प्रकारों में छात्रों के बीच दृश्य सीखने की शैली प्रमुख प्राथमिकता थी। शोधकर्ता सलाह देते हैं कि रसायन विज्ञान के शिक्षकों को अपने छात्रों की विभिन्न शिक्षण शैलियों को समायोजित करने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण शैलियों को अपनाना चाहिए। शिक्षण और सीखने की शैलियों के बीच एक संरेखण रसायन विज्ञान में छात्रों के शिक्षण , सीखने और प्रदर्शन में सुधार करेगा।

हेमलता (2013) ने पाया "चेन्नई जिले के चयनित कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों की उपलब्धि पर सीखने की शैली का प्रभाव।" अध्ययन 1x1 डिजाइन के साथ पूर्व-पोस्ट वास्तविक अनुसंधान है। अध्ययन का नमूना 600 कॉलेज के छात्रों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। वेंकटरामन (1999) द्वारा लर्निंग स्टाइल्स इन्वेंटरी का उपयोग विभिन्न प्रकार की शिक्षण शैलियों को मापने के लिए किया गया था। शोध के परिणाम
रवि और मंजू (2013) ने अध्ययन किया "प्राथमिक छात्रों की सीखने की शैली: क्या स्कूल का माहौल सीखने की शैली में हस्तक्षेप करता है ?" नमूने में तीन शैक्षिक वातावरण (सीबीएसई , एसबीएसई और मैट्रिक) के 300 प्राथमिक (8 वीं कक्षा) के छात्र शामिल थे। जोय रीड (1987) द्वारा सीखने की शैली सेक्टर का पैमानाका विकास और मानकीकरण किया गया , जिसका उपयोग डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था। `एफ-टेस्ट ` का उपयोग लर्निंग स्टाइल्स में औसत स्कोर अंतर को खोजने के लिए किया गया था और निष्कर्षों से पता चला कि विभिन्न शैक्षिक वातावरणों के आधार पर समूहों के बीच छात्रों के बीच सीखने की शैली में महत्वपूर्ण अंतर था।

बावोन और ओरोसोवो (2015) ने "सामान्य निर्णय-निर्धारण पैमानाकी मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का विश्लेषण किया और निर्णय लेने की शैलियों , निर्णय लेने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध को वैधता के रूप में संबोधित किया"। 427 स्लोवाक हाई स्कूल और विश्वविद्यालय के छात्रों (64.6% महिलाओं) ने अध्ययन में भाग लिया। डेटा को जनरल निर्णय लेने की शैलियों पर प्रश्नावली (स्कॉट एंड ब्रूस 1995), वयस्क निर्णय लेने की क्षमता , विश्व स्वास्थ्य संगठन अच्छी तरह से सूचकांक है , तनाव का पैमाना (कोहेन अल) की मदद से इकट्ठा किया गया था। , 1983) और द बेक डिप्रेशन इन्वेंटरी (शिमत एट अल। , 2003)

हसन , रिचर्ड और मूर्रे (2014) ने "एक इंडोनेशियाई स्कूल के संदर्भ में स्कूल प्रमुख नेतृत्व शैलियों और स्कूल प्रमुख निर्णय लेने की शैलियों के बीच संबंधों" की जांच की। लैंपुंग स्कूल जिलों के 475 स्कूल शिक्षकों ने अध्ययन में भाग लिया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि स्कूल के प्रिंसिपल की नेतृत्व शैली और

उनकी निर्णय लेने की शैलियों के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था। शिक्षक की राय में, प्रिंसिपलों को परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली पसंद करनी चाहिए और अहस्तक्षेपनेतृत्व शैली से बचना चाहिए और निर्णय लेने की शैली के मामले में तर्कसंगत निर्णय लेने की शैली को प्राथमिकता देना चाहिए और टालने वाले निर्णय लेने की शैली से बचना चाहिए।

कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों पर आयोजित किया। मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर जिलों में स्थित विभिन्न स्कूलों में पढ़ने वाले सभी छात्रों ने वर्तमान अध्ययन के लिए जनसंख्या का गठन किया। इस अध्ययन के नमूने में जबलपुर जिले के विभिन्न स्कूलों के 90 वरिष्ठ माध्यमिक छात्र शामिलथे। जांचकर्ता ने व्यक्तिगत रूप से चयनित स्कूलों का दौरा किया और संबंधित स्कूलों के प्रमुख से अनुमति ली। छात्रों के साथ उचित तालमेल स्थापित किया जायेगा और फिर उन्हें शोध का उद्देश्य समझाया जायेगा । इस प्रकार, स्कूलों और छात्रों से उचित सहयोग प्राप्त करने के बाद, अन्वेषक ने एक-एक करके परीक्षण वितरित करेंगे और उन्हें एक उचित वातावरण में भरने के लिए उचित समय देने के बाद उन्हें एकत्र किया। संबंधित समूहों के संदर्भ में संबंधित चरों के औसत अंकों के बीच अंतर का आकलन करने के लिए टी-टेस्ट को नियोजित किया।वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों उत्पाद मोमेंट सहसंबंध तकनीक की भावनात्मक योग्यता, सीखने की शैली और निर्णय लेने की शैलियों के बीच अंतर-सहसंबंध को खोजने के लिए नियोजित किया।

डेटा विश्लेषण

वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक क्षमता

यह खंड (ए) लिंग, (बी) इलाके, (सी) स्कूल के प्रकार, (डी) स्ट्रीम के संबंध में भावनात्मक योग्यता के आयामों पर वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के बीच साधनों के अंतर के विश्लेषण और व्याख्या का विवरण प्रस्तुत करता है।

- **वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक क्षमता के आयामों पर अंतर**

वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक क्षमता के आयामों पर साधनों के अंतर की तुलना करने के लिए, डेटा का विश्लेषण माध्य और टी-परीक्षण की सहायता से किया जाता है।

तालिका 1: लिंग के संबंध में भावनात्मक क्षमता के आयामों पर वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के बीच अंतर

भावनात्मक योग्यता के आयाम	लड़के (N=90)		लड़कियाँ (N=90)		'टी' स्कोर	स्तर का महत्व
	माध्य	एसडी	माध्य	एसडी		
एडीएफ	17.45	5.82	14.87	3.78	5.25	0.01
एईसीई	19.85	4.07	18.89	3.96	2.39	0.05
एएफई	19.56	3.46	17.62	3.59	5.50	0.01
एसीपीई	19.94	3.49	19.43	4.19	1.32	NS
ईपीई	23.26	3.97	24.79	3.196	4.24	0.01
कुल	100.06	13.41	95.59	12.78	3.41	0.01

तालिका से स्पष्ट है कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर लड़कों और लड़कियों में भावनात्मक योग्यता पर औसत अंक क्रमशः 100.06 और 95.59 हैं। 'टी' स्कोर 3.41 है, जो 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है। परिणामतः परिकल्पना– "वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक क्षमता में लिंग के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" खारिज कर दिया जाता है, और इसलिए, यह कहा जा सकता है कि लड़कों की भावनात्मक क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है और गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी की छात्राएं। तालिका से यह भी पता चलता है कि लड़कियों की तुलना में लड़कों का औसत स्कोर अधिक है। तात्पर्य यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कों में लड़कियों की तुलना में अधिक भावनात्मक क्षमता होती है।

तालिका 2: विद्यालय के प्रकार के संबंध में भावनात्मक क्षमता के आयामों पर वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के बीच अंतर

भावनात्मक क्षमता के आयाम	सरकारी (N =90)		निजी (N =90)		'टी' स्कोर	स्तर का महत्व
	माध्य	एसडी	माध्य	एसडी		
एडीएफ	16.35	5.85	15.97	4.15	0.749	एन एस
एईसीई	19.51	4.12	19.225	3.96	0.705	एन एस
एएफई	18.77	3.95	18.41	3.34	0.984	एन एस
एसीपीई	19.47	4.08	19.895	3.63	1.101	एन एस
ईपीई	24.16	3.9	23.895	3.45	0.719	एन एस
कुल	98.26	13.82	97.39	12.73	0.655	एन एस

तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी और निजी स्कूलों के वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में भावनात्मक योग्यता पर औसत अंक क्रमशः 98.26 और 97.39 हैं। 'टी' स्कोर 0.655 है, जो 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है। परिणामतः परिकल्पना– "विद्यालय के प्रकार के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" स्वीकार किया जाता है, और इसलिए, यह कहा जा सकता है कि वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक क्षमता में अध्ययन कर रहे हैं सरकारी और निजी स्कूलों में कोई खास फर्क नहीं है।

तालिका 3: धारा के संबंध में भावनात्मक योग्यता के आयामों पर वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के बीच अंतर

भावनात्मक क्षमता के आयाम	मानविकी (N=90)		विज्ञान (N=90)		'टी' स्कोर	स्तर का महत्व
	माध्य	एसडी	माध्य	एसडी		
एडीएफ	15.97	5.898	16.35	4.09	0.749	एन एस
एईसीई	19.29	4.01	19.45	4.07	0.396	एन एस
एएफई	18.58	3.65	18.59	3.67	0.027	एन एस
एसीपीई	19.46	3.82	19.91	3.89	1.167	एन एस
ईपीई	23.99	3.59	24.07	3.77	0.217	एन एस
कुल	97.28	13.43	98.37	13.13	0.821	एन एस

0.05 = 1.97, 0.01 = 2.60 . पर 't' का मान

तालिका 4: लिंग के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की निर्णय लेने की शैली में साधनों का अंतर

निर्णय लेने की शैलियों के प्रकार	लड़के (N =90)		लड़कियाँ (N =90)		'टी' स्कोर	स्तर का महत्व
	माध्य	एसडी	माध्य	एसडी		
युक्तिसंगत	20.13	3.92	21.31	3.29	3.261	0.01
सहज ज्ञान युक्त	19.43	3.36	20.45	3.27	3.077	0.01
आश्रित	16.99	3.96	19.21	3.65	5.829	0.01
परिहार	13.55	4.29	13.12	4.62	0.965	एन एस
स्वतःस्फूर्त	16.07	3.697	15.26	3.898	2.132	0.05

0.05 = 1.97, 0.01 = 2.60 . पर 't' का मान

तालिका से स्पष्ट है कि सीनियर सेकेंडरी के लड़कों और लड़कियों की तर्कसंगत , सहज और आश्रित निर्णय लेने की शैलियों की तुलना करने वाले 'टी' स्कोर क्रमशः 3.261, 3.077, 5.829 हैं , जो 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निर्णय लेने की तर्कसंगत , सहज और आश्रित शैली वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के लिंग से काफी प्रभावित होती है। इसका आगे यह अर्थ है कि लड़के और लड़कियों के वरिष्ठ माध्यमिक छात्र अपनी तर्कसंगत , सहज और आश्रित शैलियों के संबंध में काफी भिन्न होते हैं।तालिका यह भी दर्शाती है कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर लड़कों और लड़कियों की सहज निर्णय लेने की शैली की तुलना करने के लिए 'टी' स्कोर 2.132 है , जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसका मतलब है कि लड़के और लड़कियों के वरिष्ठ माध्यमिक छात्र अपनी सहज निर्णय लेने की शैली के संबंध में काफी भिन्न होते हैं।

तालिका 5: स्थानीयता के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की निर्णय लेने की शैली में साधनों का अंतर

निर्णय लेने की शैलियों के प्रकार	ग्रामीण (N =90)		शहरी (N=90)		'टी' स्कोर	स्तर का महत्व
	माध्य	एसडी	माध्य	एसडी		
युक्तिसंगत	21.44	3.26	19.995	3.89	4.026	0.01
सहज ज्ञान युक्त	20.13	3.1	19.75	3.57	1.137	एन एस
आश्रित	18.21	3.97	17.99	3.97	0.554	एन एस
परिहार	12.77	4.46	13.89	4.38	2.534	0.05
स्वतःस्फूर्त	15.55	3.91	15.77	3.73	0.576	एन एस

0.05 = 1.97, 0.01 = 2.60 . पर 't' का मान

तालिका से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी इलाकों के वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की तर्कसंगत और परिहार निर्णय लेने की शैलियों की तुलना करने वाला 'टी' स्कोर क्रमशः 0.01 स्तर पर 4.026 और 0.05 स्तर पर 2.534 महत्वपूर्ण है। इस प्रकारयह अनुमान लगाया जा सकता है कि निर्णय लेने की तर्कसंगत और परिहार शैली वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के इलाके से काफी प्रभावित होती है। इसका आगे यह अर्थ है कि ग्रामीण और

शहरी इलाकों के वरिष्ठ माध्यमिक छात्र उनकी तर्कसंगत और परिहार निर्णय लेने की शैली के संबंध में काफी भिन्न हैं। तालिका ने यह भी अनुमान लगाया कि ग्रामीण और शहरी इलाके के वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के लिए सहज, आश्रित और सहज निर्णय लेने की शैलियों के संबंध में 'टी' मान क्रमशः 1.137, 0.554 और 0.576 हैं जो 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं हैं। तात्पर्य यह है कि इन निर्णय लेने की शैलियों के संबंध में ग्रामीण और शहरी इलाके के वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा 16 से 18 वर्ष के आयु वर्ग में फैली हुई है। यह किशोरावस्था की अवधि है जब छात्र विभिन्न मनोवैज्ञानिक तनावों और तनावों से गुजरते हैं। इसके अलावा, एक छात्र अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न शारीरिक परिवर्तनों और विकासों का पता लगाता है। वह भावनात्मक रूप से अधिक संवेदनशील हो जाता है और वह खुशी, भय, चिंता और सभी प्रकार की इच्छाओं और कार्यों के दर्द से गुजरता है। वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा मूल रूप से किशोरों की पूर्ति करती है। इसलिए, वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा को इन किशोरों की शारीरिक, मानसिक, नैतिक मांगों का जवाब देना चाहिए।दूसरे, वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय शिक्षा के बीच एक सेतु, एक जंक्शन के रूप में खड़ी है। यह किशोरावस्था की अवधि है कि एक छात्र के चरित्र, व्यक्तित्व और दृष्टिकोण का गहरा गठन होता है। गोलेमैन) 1995) के अनुसार, " व्यक्तित्व के सभी घटक, जैसे कि बढ़ना, टकराना, साझा करना, प्राप्त करना, मांग करना शुरू हो जाता है, जैसे कि लड़का / लड़की अपनी युवावस्था के जंक्शन पर है। " वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा शिक्षा के प्राथमिक फोकस के रूप में प्रत्येक शिक्षार्थी के सीखने पर जोर देती है। एक छात्र की सीखने की प्रक्रिया उसके विषय को सीखने के तरीके / विधि पर निर्भर करती है। इसलिए, प्रत्येक छात्र को यह समझना होगा कि ज्ञान के विभिन्न रूपों को सीखने के अपने पाठ्यक्रम को कैसे आगे बढ़ाया जाए।भावनात्मक क्षमता एक व्यक्ति को अपनी भावनाओं के साथ – साथ दूसरों की भावनाओं को सम झने में सक्षम बनाती है। यह उन्हें सभ्य समाज में उन्हें विनियमित करने और व्यक्त करने के लिए भी प्रशिक्षित करता है। संक्षेप में भावनात्मक क्षमता विभिन्न भावनाओं की समझ, विनियमन और अभिव्यक्ति से संबंधित है। भावनात्मक क्षमता एक कुंजी है जो किसी व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार के व्यक्तित्व के विभिन्न ताले खोलती है। यह उसे अनावश्यक तनाव और तनाव से बचने, अपने सहपाठियों के साथ मित्रता और कल्याण विकसित करने और अपने विचार, भाषण और कार्य को नियंत्रित करने की क्षमता को विकसित करने के लिए सिखा सकता है। भावनात्मक क्षमता के 5 कारक हैं, आत्म जागरूकता, प्रेरणा, आत्म विनियमन, सहानुभूति और रिश्तों की गहराई। ये सभी कारक किसी व्यक्ति में नौकरी की क्षमता के लिए जिम्मेदार हैं। वह प्रभावशाली और सफल तरीके से दूसरों के साथ अपने संबंधों में सहज है।

संदर्भ

[1] कटना, अंबिका (2012), अपने लिंग, धारा, इलाके, स्कूलों के प्रकार और सामाजिक श्रेणी के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल के छात्रों की भावनात्मक क्षमता का अध्ययन। (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला को अप्रकाशित एमएड शोध प्रबंध)। अभिलाषी पी.जी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, एनआर चौक, मंडी, एच.पी.

[2] कौर, आर. और बाला आई. (2016)। निर्णय लेने की शैलियों और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आत्म प्रभावकारिता के बीच संबंध। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस रिसर्च, 2 (2), 19-23।

[3] बख्शी, एन. (2012). संज्ञानात्मक और गैर-संज्ञानात्मक चर के संबंध में किशोरों की भावनात्मक क्षमता। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, 29 (3), 389-395।

[4] कुमार , एम ., और शास्त्री , सी . (2013). बाएं और दाएं मस्तिष्क डोमेन छात्र की भावनात्मक खुफिया और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन। शैक्षिक अनुसंधान के ब्रिक्स जर्नल , 3 (1) 17-21 ।

[5] खलीके , ए। , और अहमद , ए.एच. (2014). असम में बारपेटा जिले के + 2 छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धि और आध्यात्मिक ज्ञान का अध्ययन। शिक्षा और अनुसंधान में हालिया शोध , 19 (तृतीय-चतुर्थ) , 68-72 ।

[6] अग्रवाल , एस ., और यादव , . स . (2013) । भावी शैलियों को उनके लिंग और धारा के संबंध में भावी शिक्षकों की प्राथमिकताएँ। शैक्षिक अनुसंधान के ब्रिक्स जर्नल , 3 (1), 30-34

[7] अलादे , (2014). रसायन विज्ञान के छात्रों की सीखने की शैली का तुलनात्मक अध्ययन लैगोस महानगर में चयनित सार्वजनिक और निजी स्कूलों में प्राथमिकताएं। जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन , 4 (1), 45-53 ।

[8] बिशप , एच . एन . (1985). स्टूडेंट्स लर्निंग स्टाइल्स: स्टूडेंट्स के लिए इंप्लाइजेशन एंड इंस्टीट्यूशनल डेवलपमेंट , डिसिपेरेशन एब्सट्रैक्ट इंटरनेशनल , 1986, वॉल्यूम। 46 (8), 2230- ए।

[9] डेबेलो , टी . (1990). सीखने की शैली: शोधकर्ता सीखने की शैली को परिभाषित करते हैं। एक डीएसएस के साथ निर्णय लेना। डॉक्टरेट शोध प्रबंध , कॉलेज ऑफ बिजनेस , एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी , निबंध निबंध अंतर्राष्ट्रीय।

[10] जेकोबी , जेएम (2008). प्राचार्यों के निर्णय लेने की शैली और प्रौद्योगिकी स्वीकृति और उपयोग के बीच संबंध। पीएचडी थीसिस , पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय , पेंसिल्वेनिया।

[11] बियानुअल , के.आर. (2015) है। अपने सामाजिक कौशल और शिक्षण योग्यता के संबंध में छात्र शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता , 14 (6), 45-48 ।

[12] बख्शी , एन। (2012), संज्ञानात्मक और गैर-संज्ञानात्मक चर के संबंध में किशोरों की भावनात्मक क्षमता। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च , 29 (3), 389-395 ।

[13] कटारिया और कौर (2014), सीखने के परिणामों और किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंधों का अध्ययन। शिक्षा और मनोविज्ञान में हाल के शोध , 18 (तृतीय-चतुर्थ) , 93-103 ।

[14] रेड्डी , जी.एल. , और अनुराधा , आर.वी. (2013), भावनात्मक खुफिया , व्यावसायिक तनाव और उच्च माध्यमिक शिक्षकों की नौकरी का प्रदर्शन: एक सहसंबंधी अध्ययन , एडट्रैक , 12 (6), 15-20 ।

[15] खाती , एच (2013), बौद्धिक क्षमता , भावनात्मक बुद्धिमत्ता और पोस्ट की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता छात्रों को उनके लिंग , अकादमिक धारा और शैक्षणिक प्राप्ति के संबंध में वर्गीकृत करती है। एडुट्रक्स , 129 (10), 35-43 ।

[16] रेड्डी , जी.एल. , और अनुराधा , आर.वी. (2012), उच्चतर माध्यमिक स्तर पर काम करने वाले शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि। शैक्षिक अनुसंधान के ब्रिक्स जर्नल , 2 (2 और 3), 97-105 ।